Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

प्रत्येक क्षेत्र और विभिन्न संदर्भो में नारी अस्मिता का हिन्दी महिला उपन्यासों में वर्णन

Savita[1]* Prof. Duwedi[2]

[1] Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Professor

सार – समाज में स्त्री की स्थिति बहुत दयनीय रही। वह पुरुष के अधीन थी तथा उसे पूर्णतः पुरुष पर ही निर्भर रहना पड़ता था। उसका स्वतंत्र अस्तित्व तथा अधिकार समाप्त हो गया। उसके विकास के तमाम रास्ते व्यवस्था द्वारा अवरुद्ध कर दिए गए। वह पुरुष के उपभोग और उपयोग की वस्तु बन गई। उन्नीसवीं शताब्दी के पूवाद्ध तक महिलाओं की स्थिति ऐसी ही रही लेकिन बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्त्रियो की स्थिति को बदलने के प्रयास दिखाई देते हैं। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, रामकृश्ण परमहंस आदि ने नारी की समस्याओं की ओर ध्यान दिया। दहेज प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी रुढ़ते प्रचार-प्रसार सुर शिक्षा के आलोक में स्त्री अपने नए-नए रूपो से परिचित हुई। वह घर की दहलीज़ से निकलती है, आत्मनिर्भर बनती है और पुरुषों के साथ कदमताल मिलाने की कोशिश करती है। उसकी कोशिश पूरी तरह आज भी सफल नहीं हुई है। पितृसत्तात्मक मानसिकता में खास अंतर नहीं आया है। इस प्रकार स्त्रियों को पितृसत्तात्मक व्यवस्था और रुढियों के दो तरफा आक्रमण को कहीं-न-कहीं आज भी झेलना पड़ता है।

----------x----------

प्रस्तावना

इसी संदर्भ मे प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिमोन द बोउवार ने "द सेकंड सेक्स" मे कहाँ है कि - "स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है।" इसी दृष्टिकोण के कारण नारी का जीवन सदैव यातनाओ व त्रासदियों से ओतप्रोत रहा है। समाज की इस मनोवृति के कारण स्त्री को अपने अस्तित्व को पहचान दिलाने हेतु न जाने कितनी प्रतीक्षा करनी होगीद्य

प्रस्तावना पुरुष और नारी, समाज की दो मुलभूत ईकाईया है। दोनों के संयोग से समाज का सृजन होता है। पुरुष आकाश है तो नारी धरा नारी की संगति से ही पुरुष सभ्य बनता है। नारी के बिना पुरुष के अस्तित्व की रचना संभव ही नहीं है। नर धात्री होने के कारण उसे नारी कहा गया है। श्नारीश् शब्द स्वतरू सम्पूर्ण व निरपेक्ष सत्ता का बोध करता है जिसमे शक्ति, सौंदर्य, शील, त्याग, कर्तव्य परायणता, उत्सर्ग आदि सभी तत्व समाहित होते है। सामाजिक व पारिवारिक संचालन मे दोनों भूमिका अहम होती है। समकालीन युग में नारीवाद, नारी अस्मिता, नारी विमर्श, नारी सशक्तिकरण जैसे सभी विषय विश्वव्यापी मुद्दे है। सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक स्तर पर बहसें, विमर्श, आंदोलन व स्त्रीलेखन के कारण यह अधिक प्रभावशाली रूप में उभर के सामने आया है। स्त्री अस्मिता व विमर्श को हर व्यक्ति ने अपने- अपने ढंग से स्पष्ट करने की कोशिश की है।

यह लेख नारी अस्मिता की पहचान व उसके संघर्षमय जीवन की गाथा स्त्री अस्मिता से अभिप्राय स्त्री के स्व के अस्तित्व या उसकी पहचान से है। जब स्त्री अपने समाज व परिवेश में अपने हिसाब से स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है, तब वह परिवार

और समाज में अपने अस्तित्व की तलाश करती है। लेकिन धर्म व सामाजिक अर्थव्यवस्था के नाम पर उसे विवाह ओर परिवार से इस तरह बांध दिया जाता है की वह अपनी स्वतंत्रता का विसर्जन और आत्मसमर्पण करने की कीमत पर ही सम्मान की जिंदगी बिता सकती है। इस कारण स्त्री आज तक समाज में बेटी, बहन और माँ के रूप मे ही पहचानी जाती रही है। लेकिन वर्तमान परिपेक्ष्य में स्त्री इन बंधनो से मुक्त होकर स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप मे अपनी। पहचान कायम

www.ignited.in

करना चाहती है। यही से प्रारम्भ होती है-स्त्री की अस्मिता की तलाश व स्त्री अस्मिता का विमर्श।

"छिन्नमस्ता" प्रभा खेतान का बहुचर्चित उपन्यास है जो स्त्री के उत्पीड़न व स्वालम्बन की कहानी है। "छिन्नमस्ता" की प्रिया की शादी से पूर्व की कहानी प्रभाजी की खुद की कहानी है। उच्चवर्गीय मारवाड़ी परिवार में पाँचवी संतान के रूप में जन्मी प्रिया का बचपन उपेक्षित, कुंठित व भय से आक्रांत है। नौ वर्ष की अल्पायु मे ही उनके पिता का देहांत हो गया। और उनका सारा बचपन माँ व पिता के प्रेम से वंचित रहा। "कैसा अनाथ बचपन था? अम्मा ने अभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटो उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती, शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले।

बचपन से ही प्रिया के जीवन में यातनाओं का दौर शुरू हो गया। हर समय व हर राह पर सताई जाने वाली प्रिया के शारीरिक शोषण की कहानी उसके परिवार से ही शुरू होती है। प्रिया अपने ही घर में अपने बड़े भाई की वासना का शिकार होती है। भाई द्वारा अस्मत खोई बहन का वर्णन करने वाली प्रभा खेतान पहली लेखिका है। प्रभा खेतान कहती है - "सवाल उठता है कि स्त्री जब यौन उत्पीड़न पर कुछ कहना चाहती है तो पुरुष व्यवस्था उसका विरोध क्यों करती है? व्यवस्था इतनी आतंकित क्यों होती है।" वह अपने भाई द्वारा किए गए अपराध के बारे में किसी से कुछ नही कहती है क्योंकि दाई माँ उससे कहती है – "सुन बिटिया! हमारा कहा मान ओर जिंदगी मे ई सब बात किसी से न कहियों। आपन पति परमेसर से भी नहीं। अउर सब समय हमारा साथ रहो। ना बिटिया, हम तोहके छोड़कर कही नहीं जाऊब।

बचपन के इस घटना के बाद उसे कॉलेज में भी प्रोफेसर के द्वारा वासना का शिकार होना पड़ता है। परंतु वह हर चुनौती का सामना करते हुए घरवालों के विरुद्ध जाकर अपनी पढ़ाई को पूरा करती है। वह अपनी भाभी ओर अम्मा की तरह घुटन भरी जिंदगी नहीं जीना चाहती, क्योंकि उसने प्रोफेसर चेटर्जी से सीखा था कि - "स्त्री होना कोई अपराध नहीं है, पर नारीत्व की आँस भरी नियति स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है।" पढ़ाई के पश्चात प्रिया की शादी एक सम्पन्न परिवार में होती है। किन्तु विवाह के कटु अनुभवों से समझ आता है कि धनी परिवार में विवाह होने पर भी स्त्री के जीवन विद्रपताएँ समाप्त नहीं होतीद्य अतरू प्रिया व्यावसायिक जगत में प्रवेश करती है। क्योंकि वह एक भोग की वस्तु बनकर नही रहना चाहती थी। लेकिन नरेन्द्र अपने पति होने का अधिकार प्रिया पर थोपना चाहता था।

साहित्य की समीक्षा

किरण ग्रोवर (2015) आज भी हमारे यहाँ स्त्री किसी की पुत्री, किसी की बहिन, या पत्नी के नाम से पुकारी जाती है, अपना नाम होने पर भी उसकी पहचान किसी अन्य के साथ जुड़ी रहती है। अपने अस्तित्व के प्रति जागरुकता, अपने होने का एहसास, स्वतंत्रा पहचान, नारी की अस्मिता, ये सब स्त्री के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। बीसवीं सदी के उतरार्द्ध में स्त्री -अस्मिता संबंधी बहस अपने चरम पर दिखाई देती है। अस्मिता बोध दूसरों के साथ ज्यादा मजबूत और स्वस्थ संबंध को जन्म देती है, आत्मीयता का संबंध विकसित करती है। यदि स्त्री की अस्मिता होती तो अस्मिता की खोज का सवाल ज्यादा महत्वपूर्ण सवाल नहीं बन पाता। स्त्री की अस्मिता के सवाल ज्यादा टेढ़े है। स्त्री और पुरुष दो अलग अस्मिताएं है। अस्मिता का प्रश्न आज के विमर्श का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। स्त्रीवादी लेखिकाएँ स्त्री-अस्मिता को एक नहीं कई रूपों में देखती हैं। स्त्री अस्मिता का प्रमुख आधार है, उन तमाम तर्कों का निषेध अथवा अस्वीकार जो स्त्री को उसकी स्वतंत्रा पहचान से वंचित करते हैं।

रेखा कस्त्वार (2006) नासिरा जी को लेखकीय विरासत धरोहर के रूप में मिली। साहित्य का इन्द्रधनुषी रंग उनकी कहानी, उपन्यास, नाटक, अनुवाद, बाल साहित्य,साक्षात्कार, समीक्षात्मक ग्रन्थ, यात्रावृत्त, निबन्ध आदि कई विधाओं में झलकता है। इनका सहज स्वभाव, नैसर्गिक सौन्दर्य, बचपन, परिवार, शिक्षा, भाषा ज्ञान, विवाह, मित्राता, प्रकृति प्रेम, नारी बोध, अन्तराष्ट्रीय बोध आदि साहित्य सृजन के प्रेरणा स्रोत हैं। उनका कथा साहित्य भारत पाकिस्तान, बंगलादेश, कैनेडा, अफ़गानिस्तान, ईराक, ईरान, जर्मनी, इथोपिया, सीरिया, युगांडा, अमेरिका, फिलीस्तीन, टर्की जैसे प्राकृतिक क्षेत्रों में जड़ें फैलाता है। नासिरा की संवेदना एक और पत्राकार की पैनी दृष्टि रखती है ।

सौनिका (2018) समाज के साथ शरद सिंह का बहुत ही करीब का घनिष्ठ संबंध रहा है। सामाजिक क्रिया-कलाप का अतिसूक्ष्म निरीक्षण करना उनके नस-नस में बसा हुआ है। समाज की स्त्रियों को उन्होंने बहुत करीब से देखा, समाज की स्त्रियाँ वेश्याव्यवसाय करने के लिए क्यों मजबूर है? इसका उन्होंने गहराई में जाकर अध्ययन किया और वेश्याओं को सुधारने के लिए अनेक सरकारी योजनाओं को उनके पास लाने का प्रयत्न किया, उनके बच्चों को अच्छा मार्गदर्शन किया जिससे आज वेश्या समाज में जन्में स्त्री एवं पुरुष बड़े ओहदे पर कार्यरत हैं।

पत्की ए. सी. (2016) स्त्री ईश्वर की अदभुत सृष्टि है। स्त्री शक्ति, शील और सौंदर्य की मूर्ति है। पुराने जमानें से लेकर भारत में शक्तिपूजा की परंपरा रही है। स्त्री सशक्तिकरण की बात सदियों से चली आ रही है। और यही सशक्तिकरण उपन्यासों के माध्यम से भी व्यक्त होता दिखाई दे रहा है। स्त्री संघर्ष करते हुये आगे बढ़ रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियाँ है उनका सामना भी बड़े धैर्य के साथ कर रही है। स्त्री - विमर्श अर्थात स्वत्व को खोजने की प्रक्रिया है। अपनी पहचान शक्ति और सत्ता को जानने की कोशिश करते हुये स्त्री जागरण की बात उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त होती दिखाई देती है। उपन्यास समाज के साथ चलने वाली साहित्यीक विधा है। साहित्यिक विधा में स्त्री को सही रूप से जानने पहचानने की कोशिश की गयी है।

उपसंहार

नारी अस्मिता की परिभाषा किसी निश्चित वैचारिक फ्रेमवर्क के अन्तर्गत नहीं की जा सकती। ऐतिहासिक एवं सामाजिक कारणों की खोज के बावजूद समाज में नवीन विकास और परिवर्तन अनेक अन्तर्विरोधों से युक्त हैं। परंपरा की विरासत और आधुनिकता का स्वीकार जिस निर्णायक क्षितिज की अपेक्षा रखता है, वह बहुत ही धुंधला है। नारी अस्मिता अपने स्थूल रुप में नारी की वैयक्तिकता, व्यक्ति या मनुष्य के रुप में उसकी गरिमा, प्रतिष्ठा तथा पहचान है, जिसमें अपने जीवन पर खुद उसकी सत्ता होती है। नारी अस्मिता नारी के व्यक्तित्व की विशिष्ट एवं विलक्षण पहचान है जो उसके समाज की विलक्षण ऐतिहासिकता एवं वास्तविक अथवा मिथकीय अतीत से जोडती है। यह निजत्व का भाव है जिसमें नारी की इच्छा-अनिच्छा महत्वपूर्ण होती है। यह नारी में अहंभाव उत्पन्न करते हुए स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने की ख्वाहिश भी व्यक्त करती है। नारी शिक्षा एवं संवैधानिक अधिकारों से नारी की स्थति में आशातीत परिवर्तन आया है, किन्तु सामाजिक संदर्भों में नारी आज भी परंपराओं, रुढियों, संस्कारों से पूर्णतः स्वतंत्र नहीं हुई है। नारी के स्वतंत्रत व्याक्तित्व एवं स्वाभिमान ने अनेक अन्तद्र्वंद्व कुण्ठा, एवं संघर्ष को जन्म दिया है। उसका स्वाभिमान, स्वतंत्रता ने नारी आन्दोलनों को सशक्त वाणी प्रदान की है। पश्चिमी नारी आन्दोलन ने भारतीय समाज में नारी स्वतंत्रता के नए रुपों को जन्म दिया है। नारी अस्मिता का दृष्टिकोंण पुरुष विरोधी नही है, बल्कि पुरुष वर्चस्व का विरोधी है, समाज में नारी की पहचान और क्षमता मनवाने का एक सार्थक एवं कारगर प्रयास है। 20वीं सदी में भूमण्डलीकरण, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के कारण भारतीय समाज में नारी अस्मिता को बल मिला।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रेखा कस्त्वार, स्त्री चिन्तन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2006 1994, पृ. 64

2. सौनिकाए शरद सिंह के साहित्य में नैतिकता का समाज पर प्रभाव, International Journal of Multidisciplinary Education and Research ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12 Received: 29-11-2018; Accepted: 31-12-2018

3. पत्की ए. सी. स्त्री विमर्श और हिंदी उपन्यास International Recognized Multidisciplinary Research Journal Volume : V, Issue : XII, January - 2016

4. Dr. Mrs. Vrinda Sengupta, नारी चेतना, मानवाधिकारः नई दशा-दिशा एवं अस्तित्व की पहचान, International Journal of Advances in Social Sciences Int. J. Ad. Social Sciences 1(2): Oct. - Dec. 2013; Page 58-60

5. डॉ. उषा यादव, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृ.सं.-162

6. आशारानी व्होरा, नारी शोषण: आईने और आयाम, पृ.सं.-233

7. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता (द सैकेण्ड सैक्स) का हिन्दी रूपांतरण सार्क विहार, 1990, पृ.सं.-60

8. रूपा सिंह, स्त्री अस्मिता और कृष्णा सोबती, पृ.सं.-18

9. डॉ. दर्शन पाण्डेय, नारी अस्मिता की परख, पृ. 1

Corresponding Author

Savita*

Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan